

43

॥ (कवचिचिदिदयर्गु) ॥

१०२५

4-370

द्वयंस्तु वराचार्यं तुला श्री महाविहार

DH 370

कुरु गुरु श्वश्री कुरु वीर निर्गत कुरु श्री चतु मला
 मूलांग गुरु स सर्वदा अथ गि विरु ह्य ग कुरु म स र्जी
 गा वरु नू वरु वाधिस त्वा न वि म य म ग म ना दिकं कुरु
 ला वि ला व य नू र्गी य म दि गा स मा य कुरु च उ र्थ ड य कुरु
 वरु व ता व की व र्थ कुरु ॥ पूर्व ॥ ओं वरु क क प व न च य कुरु
 कुरु ॥ पश्चिम ॥ ओं वरु म र्जी व क ह २ क व २ व न च २ कुरु ॥
 य २ कुरु कुरु कुरु की व य न सर्व र व वि र व त ज कि नी नां मे
 य न ॥ सर्व र व न म र्जी म ग अ श्व ॥ न मे र वि व क ॥ ओं न
 ता से न व क स्व ला वा त्म का र्ही ॥ य न वि वि डि म न म य न ॥

॥ १ ॥

म मूलांग य प ला श्व वा दिस मा ग कुरु दि म अ वि ला व य न ॥ कुरु का व कुरु स त्ति र सूर्य म
 हि रं ग न ८ संपूर्ण व ज नां गु ष य म न मा द नां र्णे को र्णे को दिस त्वा नां र्ण्यो ग या प द स
 म धु ल कुरु का व वि नि र्गतं ॥ य गा य प रं कुरु नं डों का व प वि रं र व र्ण प लि अ ने पूर्व कं सर्व
 दू षि रं र्ण ड ये हान वा मि का कुरु स वा र व र वि र्ति र्ति सूर्य म धु ल स मा य कुरु स ल कुरु
 माली नि वं डु के ॥ म र्जी म र्जी त्म कं ना र्थ म र्जी म य स त्ति र्ति ॥ नि षा य मा न डं डं डं
 ॥ ह स ना ना व ला य र्णा हि र्ति ॥ य न व मा न र्जी चतु म हा ग य मं ला व य स्थि र वि र्ति न
 र्जी म कुरु वा ॥ ओं चतु म हा ग य म र्जी कुरु र्णा ॥ ओं डों डों डों डों नू य च र २ य च र २ कुरु र्ण
 म र्जी व न च र्त्त कुरु २ सर्व ज कि नी नां गुरु र्ण य र्ण यि म च वा धि य कुरु र्णा ग य २ म य २
 ॥ य म र्जी कुरु र्णा ॥ य म कुरु वा र्ज सर्व के म र्जी कुरु र्णा ॥ ओं डों डों डों डों य म म थ न र्जा क य २

महाभाषधंरुटस्त्राहा॥ नमस्तु नमस्तु सर्वकर्माधिकयोगसुखस्वस्वादिस्त्राभाषयस्त्रमा
॥ ओं सेकुसुनमाहनायदंरुट॥ ओं यममर्दनमाहयदंरुट॥ ओं कोधनसंवरधधहदनाय
धुं कर्मकूचं ओं चक्षुमहाभाषधंरुट॥ ओं नक्रसंचलनपंचलस्यचटस्त्रमाकाधयूपाय
जस्त्रमयस्त्रवजसहासनादंरुटस्त्रवग्नेहहाहीहीहं ओं चक्षुमहाभाषधंरुट॥ ओं दहस्त्रप
दंरुट॥ ओं यमाककजीहंरुट॥ ओं दहस्त्रपचक्षुदंरुट॥ ओं हिलिस्त्रस्त्रेदंरुट॥ ओं
विशोधियतयपचयकुमकुनाभनसर्वशक्तिनीनांशसयस्त्रवन्धस्त्रदंरुट॥ ओं कोलांकलो
स्त्रस्त्रयस्त्रयस्त्रसर्वयातियस्त्राभाषयदंरुट॥ ओं चक्षुमहाभाषधंरुट॥ ॥ ॐ नमि
यथागम॥ नीचं शुभालिकां धृत्वा श्रुतवानागरुनिविशुमाकाहलावेधेडकचउनेनमा
मकीयावगविलालकायन॥ श्वदनचिविसुस्त्रमयस्त्रयन॥ कथनात्मकयागधविह्व

॥ २ ॥

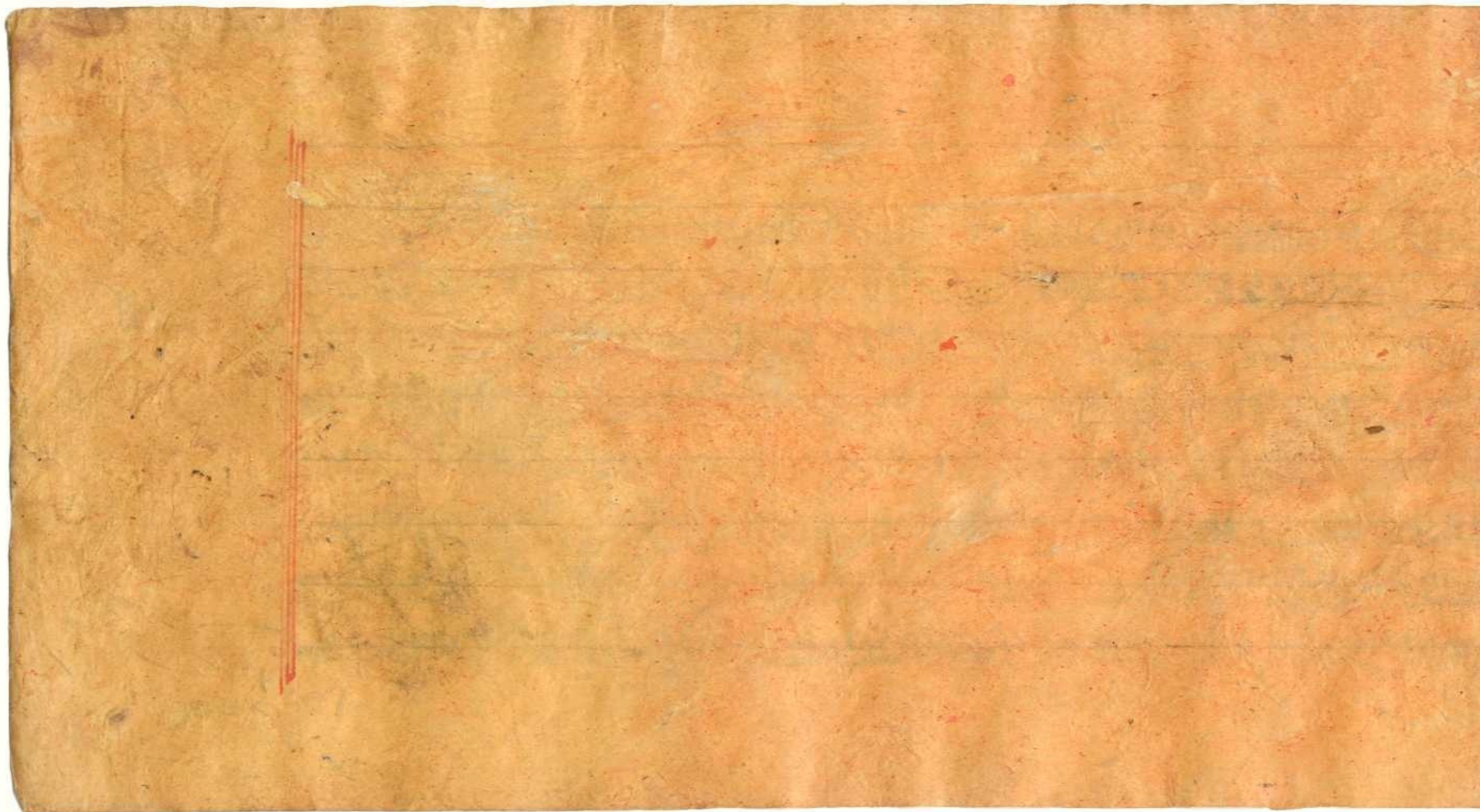
आलीनयथादृष्टं कथयस्त्रयतदभादिभिमकुनसंहवदयितारुमनानिवास॥ म
र्जयत॥ लकुकनरुवनिमिदिलकुधेजाकिनीशोभनीयपलेयचक्रधर्किंयनदर्शः
यनरुवेसिद्धिदवमाकाचमूर्तिरिष्टा॥ सप्रकारिकाधनजायनस्त्रवन्धनीयद॥ आलिवि
गासिसुयवसानिच॥ गागोशागविशुभाचरुकुधविकल्पयत॥ सम्यर्धुहस्त्रवि
ननी॥ ॥ ॐ नमिदिकयवीर्यस्त्रयशीचक्षुमहाभाषधसाधनंसमायुष्टा॥ ॥ श्रुथा
चित्करुदनिगदिमकुयकार्थयीकिस्त्रेकवीचनिर्गतेसावर्गहवयथाश्रुति
स्त्रवीर्यसाधनी॥ यत्रिपुत्रुमहासर्ववीरवीर्यचययासमकुहउयत्रियुक्तायत्र
थयामिसमासठ॥ श्रुकावधकिंमाघार्गचकावधायिकिमुच्यते॥ लकावधकुकि
आकुनामनेकार्थत्वात्॥ नत्तर्वश्रुकावधश्रुकास्युत्तर्यतिस्त्रवंगमनीकुलंश्रु

मिमांसाद्वयहिनं ॐ मि ॥ धर्मचक्रसूत्रावमिनी ॥ नदवीनक्तथंयुमियमिस्थान ॥ य
ग ॥ कथं कथं सूत्रावमिमि ॐ नदवीनक्तथंयुमियमिस्थान ॥ य
कावास्वयूपात्मकमिमिमिनक्तथं ॥ नदवीनक्तथंयुमियमिस्थान ॥ य
नाक्तमिमि ॥ नदवीनक्तथंयुमियमिस्थान ॥ य
॥ नदवीनक्तथंयुमियमिस्थान ॥ य
यननेवंगुमि ॥ नदवीनक्तथंयुमियमिस्थान ॥ य
मिन्नत्तावचकुत्ति ॥ नदवीनक्तथंयुमियमिस्थान ॥ य
वन्नथवाचकुत्ति ॥ नदवीनक्तथंयुमियमिस्थान ॥ य
विपायक ॐ मि ॥ नदवीनक्तथंयुमियमिस्थान ॥ य

[illegible]

11811

लिखयत्रमाविचेष्टसहस्रययनरुद्रा॥ जकारिहोदितिहिकंशादिहिकंवाडुर्थकंसाव
मपुडलिखकालालमययन॥ श्रुतिनचालानांविष्णुकीर्तिगति॥ त्रयैकसंस्तुमंगमभवैकम
लेखद्वंद्विद्वज्जंकंमसन्निहंयाभांवींभरुसुत्रकामाकटलीषधीगरुमदमयालक
कावभिवमिदयतुडीकावंगथाहदि॥ ह्रींकांगमथानाहोतयकावंगथामालामेक
यश्चक्रयश्चसर्वकामेयसाधनहं॥ रुद्रस्वाहा॥ कपालसंप्रदयकिन्वाचरुमधूनापिपूजय
मयादनाक्रममकुलजयत्यन॥ वरुनिचंभुमालकयावययत्मनीसुसमाहीन
ओंचक्षुमहासनगुप्तश्चखखादि॥ भाषयश्मचश्माचयश्चद्वंद्वंरुद्र॥ मदतनचक्षुचक्षु
ययकिपय॥ जगत्संस्तुत्रगुल्यमानंश्रुस्थिकीलथरु॥ श्रुस्त्रिनिखनरुभ्यभाते
॥ पूर्वाक्षयैर्दुलिकार्कलाहजहविनालनलिखंसाधनामविदर्हिदंकुलाकेत्यमस्त



॥१॥

DH 370

धर्मरत्न बजाचार्य सुरत श्री महाविहार